

## 为弦为砚

景 她 作词  
唯 然 作曲  
桃李醉春风 记谱

1 = F  $\frac{4}{4}$ 

演唱：伦桑

(0 6̣ 5̣ | 3̣ 2̣ 6̣ 5̣ 2̣ 3̣ | 3̣ 2̣ 3̣ 5̣ 1̣ 1̣ 7̣ | 6̣ 1̣ 6̣ 6̣ 5̣ 5̣ | 3̣ 7̣ 6̣ - | 6̣ 1̣ - 2̣ | 6̣ - - - |

6̣ 1̣ - 2̣ | 3̣ - - - | 3̣ - - - ) 3̣ 5̣ ||: 6̣ 6̣ 1̣ 7̣ 5̣ 5̣ | 6̣ - 0 3̣ 3̣ 5̣ | 6̣ 6̣ 1̣ 7̣ 1̣ 2̣ 5̣ |  
凝丹 青渡海扬烟波，千里相逢弦音恨晚醉远  
静宫商上画沿，乐影翩翩斑駁题笺三百

3 - 0 3 5 | 6 6 3 5 2 0 1 | 7 7 5 6 3 5 | 6 5 6 3 2 3 2 5 | 5 6 0 6 5 |  
客，清平声声既听取前因跌万壑，卷上应多一笔冷月付秋锁。飘零  
篇，信笔寥寥丹心寄凤池第几弦，留白琴音墨韵只影向青天。水含

3 2 3 5 2 2 | 3 - 0 6 7 | 1 7 1 3 2 3 2 5 | 5 3 0 6 5 | 3 2 3 5 2 1 |  
久春意藏笔墨，玉楼一叹笔下春光全摧折，几回泠泠清夜吟遣  
烟行云幻万千，朱褐青黄记取墨意为君颜，琴骨铮铮或可研怀

7 7 5 6 6 3 | 2 3 2 3 2 3 2 5 | 5 6 0 1 7 5 | 6 5 6 5 | 6 5 2 3 1 7 5 |  
来倦鸟和，应有知音为我狐步停画阁。高山流水袖手化墨色玉波逢良宵  
袖胭脂砚，闻君此言酣然同饮赴九泉。

6 5 6 5 | 6 3 3 3 3 2 1 | 6 - 0 3 2 1 | 2 1 5 5 3 2 3 | 2 1 6 1 7 6 5 |  
可邀一杯对酌，淋漓当风临镜拨弦赋长歌，从此意气可共山遥海

1.  
5 6 6 - - | (0 0 0 0 | 0 0 0 0 | 0 0 1 2 1 5 | 6 1 6 1 2 5 | 3 - 3 2 3 5 | 6 6 5 6 5 |  
阔。

3 0 2 3 2 1 5 | 6 5 3 5 5 | 6 - - - | 0 6 5 6 1 5 5 6 | 3 6 5 6 6 3 5 6 | 6 1 6 1 5 - |

3 - - - | 0 6 5 6 1 5 5 6 | 3 6 5 6 6 3 5 6 | 6 1 6 1 5 - | 3 6 - - | 0 0 0 ) 3 5 : ||  
四边

2.  
5 6 0 1 7 5 | 6 5 6 5 | 6 5 2 3 0 1 7 5 | 6 5 6 5 | 6 5 3 0 3 2 1 |  
阔。萧萧易水曲尽处天涯沦落，便信笔天地送君一个，故土难

6 - 0 3 2 1 | 2 1 5 6 0 5 | 6 5 6 3 2 1 7 5 | 5 6 0 1 7 5 || 5 6 6 - - ||  
涉曾经沧海尽相托，此后破阵同舟江湖浪浊。高山流D.S. 阔。